IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2021
Impact Factor: 5.731

दलित अभिव्यक्ति का प्रथम सशक्त स्वर : हीरा डोम

डॉ. अजय कुमार बिंद
असि.प्रो.- हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

प्रथम विश्वयुद्ध तक दलित रचनाकारों का कहीं संकेत नहीं मिलता है। भारतेंदु-द्विवेदी युग के रचनाकार अतीत गौरव, संस्कृति और समाज सुधार की भावना में बह रहे थे। अचानक ही दलित साहित्य के दो रचनाकारों ने मंच पर आकर अतीत के मूल्यों के विरोध में स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को अभिव्यक्त किया। उस अतीत गौरव का खंडन किया, जिसके ऊपर हिंदी मुख्य धारा का रचनाकार मुग्ध था। इस अचानक दिखने वाले परिवर्तन के पीछे निम्नलिखित कारण थे-

-अंग्रेजी शासन (कानून की समानता का अधिकार, प्रतिनिधि शासन की अवधारणा)

-महाराष्ट्र में सत्यशोधक आंदोलन और शिक्षा के महत्त्व की चेतना

-कम्यूनल अवार्ड की घोषणा और जनगणना संबंधी विवाद

-प्रथम विश्वयुद्ध में दलितों और खेतिहर जातियों की भागीदारी